2 जनवरी 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

जबेरा (म.प्र.) : यहाँ श्रीराम चौराहा स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 25 दिसम्बर तक पंचकल्याणक महोत्सव का द्वितीय वार्षिकोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समाधिमरण एवं अन्य मार्मिक विषयों पर प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम में चौंसठ ऋद्धि विधान का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 24 दिसम्बर की रात्रि में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का सम्मान किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री राजकुमारजी चौधरी, डॉ. हुकमचंदजी, पण्डित कमलकुमारजी, श्री विनोदकुमारजी, श्री सुरेन्द्रकुमारजी आदि अनेक सदस्यों ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान को देश-विदेश में प्रसारित करने हेतु प्रशंसा की।

वेदी प्रतिष्ठा एवं वार्षिकोत्सव संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ समीप ही स्थित झींझवा एवं साणोदा गांव से जिनेन्द्र भगवान का उत्थापन एवं चैतन्यधाम की नूतन वेदी पर विराजमान करने हेतु दिनांक 29 व 30 नवम्बर को वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं चैतन्यधाम का सप्तम वार्षिकोत्सव अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, विद्वानों के प्रवचन, इन्द्रसभा, यागमंडल विधान, शांति विधान आदि कार्यक्रम हुये। कार्यक्रम में पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित दीपकभाई कोटडिया अहमदाबाद, पण्डित उदयमणिजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित ध्रुवेशजी शास्त्री अहमदाबाद तथा स्थानीय विद्वान पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित सुमितजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री का सानिध्य प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित सचिनजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन श्री अमृतलाल चुन्नीलाल मेहता, श्री राजूभाई वाडीलाल शाह, श्री प्रतीकभाई चन्द्रकांत शाह द्वारा किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पूर्ण हुये।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा

चतुर्थ वार्षिक महोत्सव

दिनांक 26 फरवरी से 28 फरवरी 2016 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुनः ताजा हो जावें, इस हेतु **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का चतुर्थ वार्षिक महोत्सव दिनांक 26 से 28 फरवरी 2016 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन और टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रगण सम्पन्न करावेंगे।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

सम्पादकीय –

अधिक काम के कारण राजू का घर से बाहर रहना

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

बड़ी बहिन बेबी ने कहा –''राजू ! राजू !! ओ राजू !!! क्यों राजू ! तू सुनता क्यों नहीं है ? बहरा हो गया है क्या ?''

''क्या है दीदी ? वहीं बैठे-बैठे राजू ने कहा।''

''वहीं बैठे-बैठे दीदी-दीदी करता रहेगा या यहाँ आयेगा भी ?''

राजू ने झुंझलाकर अपना बस्ता एक ओर फेंकते हुये कहा –''फरमाओ ! क्या आज्ञा है ?''

''जरा बाजार तो चला जा, सब्जी लेकर लौटते समय प्रोफेसर सिन्हा के यहाँ से एक बुक लेते आना।''

''मैं अभी डॉ. सिन्हा के यहाँ नहीं जा सकूँगा, अभी मुझे स्कूल का कुछ जरूरी काम करना है। अभी-अभी बबली दीदी ने भेजा था, तभी तुम अपना काम बता देती। अब तो मैं जब शाम को अपने काम से जाऊँगा तभी आपकी बुक भी ले आऊँगा।'' सब्जी तो अभी ढेरों पड़ी है, देखो न जरा फ्रिज में।''

''मुझे क्या पता था कि तू कब/कहाँ जाता है ? मुझे तो अभी बुक चाहिये। तू अभी जाकर ला ! यदि मेरा कहना नहीं मानेगा तो समझ लेना, मैं तुझसे कभी भी बात नहीं करूँगी और कभी कोई चीज लाकर तुझे नहीं दूँगी। ठीक है मत जा ! आने दे पापा को ....।''

राजू सोच रहा था – ''एक बेचारा राजू और ढेर सारे काम! किस-किस के काम करे ? और कब करे ? सभी के सब काम अर्जेन्ट, न कोई काम कल पर छोड़ा जा सकता है और न दो-चार काम कभी एक साथ ही किये जा सकते हैं ? जब जिसके मुख से जो निकले वह काम उसी समय होना चाहिये। सबको अपना-अपना काम ही महत्वपूर्ण लगता है, दूसरे के काम की तो किसी को कोई परवाह ही नहीं।''

मम्मी-पापा के आते ही बेबी ने कहा –''पापा ! न तो राजू पढता ही है और न कोई काम ही करता है, मैं तो इससे तंग आ गई हूँ।''

बबली ने भी छाप लगा दी, ''हाँ, पापा ! दस बार कहो तब एक बार सुनता है।''

जब मम्मी-पापा राजू की शिकायतें सुनते-सुनते परेशान हो गये तो एक दिन उन्होंने भी लड़कियों से कुछ कहने के बजाय राजू को ही उसके कर्तव्य का बोध कराया।

उन्होंने प्रेम से कहा –''देखो बेटा ! हमें तो समय मिलता नहीं है, घर पर भी दिनरात मरीज घेरे रहते हैं और अस्पताल भी जाना ही पड़ता है। दादी-माँ और दादाजी से तो अपना ही काम नहीं हो पाता। वे तो बेचारे कुछ कर ही नहीं सकते, उल्टा उन्हीं की सेवा अपने को करनी है। घर में तुम्हीं तो सबसे छोटे हो। और छोटों काकर्तव्य है कि वे बड़ों की बात मानें। तुम्हारी बहिनों का काम तुम नहीं करोगे तो और कौन करेगा ? तुम्हीं तो एकमात्र उनके भाई हो। कल शादी होकर सब अपनी-अपनी ससुराल चली जावेगी, फिर कौन कहेगा तुमसे काम करने को ? और उनकी डॉक्टरी की पढाई भी तो कठिन है न ? तुम्हारा कितना-सा होमवर्क है...?

और हाँ स्कूल से भी कोई शिकायत नहीं आनी चाहिये। ठीक है न !''

मम्मी ने भी पापा की हाँ मिलाते हुये राजू को उसके कर्तव्य का पाठ पढाया।

वह माता-पिता को मना भी नहीं कर सका और सबके सभी काम भी करे तो कैसे करे ? इसकारण वह विचार में पड़ गया, किंकर्तव्यविमूढ हो गया।

सोचने लगा –''करूँ तो करूँ क्या ? यह सब कैसे संभव है? काम का कोई ओर-छोर तो है नहीं ? जिसके सामने दिखता हूँ, वही छोटा समझकर आदेश दे देता है। कुछ नहीं तो जितने बार भी घंटी बजे – दरवाजा ही खोलते-लगाते रहो। कोई मेहमान आये तो पानी ले आओ, चाय बना लो, पान ले आओ; कुछ नहीं तो वह शीशी उठाना, वह रबर देना, स्केल कहाँ है ?

जब बच्चा सामने बैठा हो तो किसी को भी हिलने-डुलने की क्या जरूरत है ?''

राजू ने सोचा –''अच्छा तो यह होगा कि अपन किसी के सामने ही न रहें, तो फिर न कोई दिखेगा और न भौंकेगा। न होगा बाँस न बजेगी बांसुरी।''

यह गुरुमंत्र बुद्धि में आते ही वह खुशी के मारे उछल पड़ा। बस, अब क्या था ? अब तो वह अधिकांश समय घर से बाहर ही रहने लगा।

जब पापा पूछते –''कहाँ गये थे राजू ? तो राजू का उत्तर होता – दादाजी के काम से।''

और जब दादाजी पूछते –'राजू बहुत देर से दिखे नहीं कहाँ चले गये थे?''

राजू का उत्तर होता –''पापाजी के काम से।''

इस तरह कोई भी क्यों न पूछे – तुरन्त एक को दूसरे का नाम व काम बताकर छुट्टी पा लेता।

धीरे-धीरे स्कूल जाने से भी बचने लगा, क्योंकि जब स्कूल का होमवर्क पूरा नहीं होता तो वहाँ से भी शिकायतों पर शिकायतें आती। और जब घर में ठहरेगा ही नहीं तो होमवर्क करे कब ?

बाहर रहने के लिये भी तो कोई न कोई सहारा और साथी चाहिये। सो 'खुरपी को टेढा बेंट' तो मिल ही जाता है; उसे भी

संजू का साथ मिल गया। संजू भी इसी से मिलती–जुलती समस्या का शिकार था।

संजू घर से और हॉस्टल से निष्कासित था और राजू घर के कामों से परेशान। यद्यपि राजू घर से पूरी तरह नहीं भागा था, पर जो स्थिति भगोड़ों की होती है, लगभग वही स्थिति उसकी थी।

(क्रमश:)

कार्यकारिणी गठित

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन शांतिनाथ जिनालय में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर का चुनाव दिनांक 24 दिसम्बर को मुमुक्षु मण्डल ग्वालियर के श्री विनयजी जैन (पूर्व उपाध्यक्ष) एवं संस्था निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री (पूर्व महामंत्री) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, अध्यक्ष श्री सुनीलजी जैन, उपाध्यक्ष श्री अभिनन्दनजी जैन, महामंत्री श्री रोहितजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री अमितजी जैन (रोमी), प्रचार मंत्री श्री रविजी जैन 'वीर' तथा कार्यकारिणी सदस्य श्री विनयजी जैन, श्री स्वस्तिकजी जैन, श्री गौरवजी जैन, श्री शुभमजी जैन, श्री अंकितजी जैन, श्री अभयजी जैन, श्री वैभवजी जैन, श्री रिकेशजी जैन, श्री नितिनजी जैन, श्री मनीषजी जैन, डॉ. विकासजी जैन, श्री शुद्धात्मजी जैन, श्री सचिनजी जैन, श्री भरतजी जैन व श्री संभवजी जैन निर्वाचित हुये। **– शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री**

पंचम महिला शिक्षण शिविर संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ महिला शिविरों की शृंखला में पंचम आध्यात्मिक महिला शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 24 से 27 नवम्बर तक हुआ। इस अवसर पर विदुषी राजकुमारीबेन दिल्ली, विदुषी जिनलबेन मुम्बई, विदुषी सरोजबेन अहमदाबाद, विदुषी सविताबेन अहमदाबाद द्वारा समाधिमरण, छहढाला, नियमसार, द्रव्य–गुण–पर्याय आदि विषयों पर लाभ मिला। शिविर में अहमदाबाद, मुम्बई एवं राजस्थान से लगभग 300 महिलाओं ने लाभ लिया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 व 31 जन.2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास
11 से 17 फरवरी	गुना (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
22 से 24 फरवरी	उदयपुर (राज.)	वेदी प्रतिष्ठा
26 से 28 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
21 से 28 मार्च	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द संपन्न

जयपुर–आमेर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर (मुंशीजी) आमेर में दिनांक 25 दिसम्बर को वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: जलयात्रा के पश्चात् मंत्रोच्चारपूर्वक वेदी शुद्धि हुई तथा यागमंडल विधानपूर्वक नवनिर्मित तीन वेदियों पर श्रीजी विराजमान किये गये। वेदियों पर कलशारोहण किये गये; साथ ही जिनप्रतिमाओं पर छत्र एवं भामंडल स्थापित किये गये।

विधि–विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने संपन्न कराये। समस्त कार्यक्रम श्री ओमजी छाबड़ा परिवार के विशेष सहयोग से संपन्न हुये। विधान में श्री विजयकुमारजी सोगानी, श्रीमती शीलाजी, श्रीमती सोहिनीदेवीजी आदि अनेक साधर्मियों का सहयोग रहा। कार्यक्रम में 200 से अधिक साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

प्रशिक्षण शिविर कार्यालय का उद्घाटन

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ 50वें स्वर्णजयन्ती शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर के कार्यालय का उद्घाटन दिनांक 15 दिसम्बर को हुआ। सर्वप्रथम शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर से धर्मध्वजा लेकर शोभायात्रा प्रारंभ हुई।

इस अवसर पर ब्र.सुमतप्रकाशजी, पण्डित शिखरचंदजी, पण्डित लालजीराम जैन, नन्दकिशोरजी जैन, ब्र.अमित भैया, ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मलूकचंदजी जैन, मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री सुभाषजी सर्राफ, पण्डित विनोदजी शास्त्री 'चिन्मय', पण्डित मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय', श्री गंभीरमलजी जैन, श्री रविप्रकाशजी जैन, डॉ. आर.के. जैन आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम में चिन्मय जैन बड़कुल (अध्यक्ष–अ.भा.जैन युवा फैडरेशन विदिशा) ने सभी साधर्मियों से शिविर में बढचढकर भाग लेने की अपील की। इस अवसर पर शांतिनाथ महिला मंडल विदिशा, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन विदिशा, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन महिला शाखा विदिशा एवं मुमुक्षु मण्डल विदिशा के सैंकड़ों साधर्मीजन उपस्थित थे।

ध्यान दें - समय बदल गया : अब 6.30 पर

जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों के प्रसारण का समय अब 1 जनवरी 2016 से 6.30 से 7.00 तक हो गया है।

अत: समय का विशेष ध्यान रखते हुये प्रात: 6.30 से प्रवचनों का लाभ लें। इसके तत्काल बाद 7.00 बजे से 7.20 तक अरिहंत चैनल पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

ज्ञातव्य है कि जिनवाणी चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.193, एयरटेल के 684 एवं वीडियोकॉन के 489 पर भी उपलब्ध है।

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - *(बाईसवीं कड़ी, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि अमरत्व हमें इष्ट होने पर भी क्यों नहीं हमें वीतराग–सर्वज्ञदेव द्वारा बतलाया गया आत्मा का अनादि–अनन्त स्वरूप स्वीकृत होता है ? इसी सन्दर्भ में आगे पढिये –

जगत में हम अज्ञात के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं; *क्योंकि जो ज्ञात है वह तो ज्ञात है, उसके लाभ व हानि ज्ञात हैं, उसकी मर्यादायें ज्ञात हैं। उनके बारे में हम जानते हैं कि हम उनसे कैसे बच सकते हैं या कैसे लाभान्वित हो सकते हैं। हम उनके प्रति उदासीन और बेपरवाह रह सकते हैं, उनके प्रति हमारी उदासीनता स्वाभाविक हो सकती है।* ***इसके विपरीत जो अज्ञात हैं उसके प्रति हम सशंकित भी रहते हैं और उत्सुक भी। सशंकित इसलिये कि कौन जाने वह किस अनर्थ का कारण बन जाये और उत्सुक इसलिये कि कौन जाने उसमें हमारे लिये कौनसा वैभव या अवसर छुपा हो। बस इसीलिये हम लगातार उनकी (अज्ञात विषयों की) शोध–खोज में जुटे रहते हैं; अनवरत, अहर्निश।***

आज हम सभी संसारी जीव जगत की भौतिक वस्तुओं से तो भलीभांति परिचित हैं, पर यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि ***हमारा अपना (मैं स्वयं) यह भगवान आत्मा अभी तक हमारे लिये अपरिचित ही बना हुआ है, तब क्यों नहीं अज्ञात की खोज की हमारी प्रवृत्ति के अनुरूप हम इसकी (निज भगवान आत्मा की) शोध–खोज में जुट जाते हैं, इसे जानने–पहिचानने का उपक्रम करते हैं ?***

सुख की खोज में इस जगत में हम यहाँ–वहाँ मुंह मारते फिरते हैं और हमें आज तक सुख नहीं मिला। सर्वज्ञदेव की वाणी में आया है कि यह आत्मा अनंतसुख का संग्रहालय है तब क्यों नहीं हमें इसके (अपने) अंतर में उपलब्ध सुख की खोज का विचार भी आता है ?

मैं जानता हूँ कि डर के कारण कोई बोलता नहीं है पर सभी के अवचेतन में एक सवाल बना रहता है कि ''यूं ही किसी के कह देने मात्र से हम यह कैसे मान लें कि यह आत्मा अमर हैं, अनादि–अनंत है ? आखिर कोई प्रमाण तो हो।

अरे भाई ! प्रथम तो यह किसी ऐरे–गैरे की कही बात नहीं, यह वीतराग–सर्वज्ञदेव की वाणी है। दूसरी बात तू जिस कथित भगवान के भरोसे बैठा है, दिनरात जिनके सामने अपने जायज–नाजायज अरमानों की पूर्ति की अर्जी लगाये बैठा रहता है, क्या तूने उन्हें भी कभी कहीं देखा है ?

क्या उन्होंने कभी तुझसे कहा है कि मैं तुम्हारे सब काम कर दूंगा, तुम्हें सुखी कर दूंगा ?

नहीं न ?

क्या ऐसा कोई भगवान है भी ?

अरे ! ***तेरी सभी धारणायें ही तो मात्र सुनी–सुनाई बातों पर या कपोलकल्पनाओं पर ही आधारित है। यदि तुझे आत्मा की अनादि–अनन्तता की सत्यता पर शंका है तो अन्य उन बातों की सत्यता किसने साबित की है जिनपर तुझे भरोसा है ? यदि तुझे आत्मा के अस्तित्व पर और उसकी अनश्वरता पर, उसकी अनादि–अनन्तता पर भरोसा नहीं होता तो इस संभावना के ऊपर भरोसे का क्या कारण है कि आत्मा का अस्तित्व नहीं है या आत्मा नश्वर है ?***

यह बात किसने साबित की है ?

यह बात भी तो कोई साबित नहीं कर सका है अबतक !

तब तू कैसे आत्मा के अस्तित्व के प्रति लापरवाह रह सकता है ?

यदि हमें कहीं बम रखा होने की सूचना मिले तो हम तब तक सशंकित ही बने रहते हैं जब तक कि या तो बम मिल न जाये और या फिर वहाँ पर बम न होने की बात साबित हो जाये।

बम न मिले पर बम होने की आशंका निर्मूल साबित न हो जाये तब तक हम निश्चिंत नहीं होते हैं। तब तू ***आत्मा के अस्तित्व की धारणा निर्मूल साबित हुये बिना ही आत्मा के प्रति लापरवाह, बेपरवाह और उदासीन कैसे हो सकता है ?***

अरे भाई ! तेरे पास एक ही उपाय है कि अपने अनुभव से, तर्क–युक्ति और अनुमान से तथ्यों का निर्णय करे। तब तू इस शुभ कार्य में देरी क्यों करता है ? मीनमेख क्यों करता है ?

जिसप्रकार असाध्य रोग से पीड़ित वह रोगी उन अनेक विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा कही गई बातों को गौण करके भी उस सामान्यजन की बात पर गौर करता है जो उसे जीवित बने रहने की आशा बंधाता है।

क्यों ?

क्योंकि उसे जीवन इष्ट है, वह उसके हित की बात है।

तब तू क्यों नहीं वीतराग–सर्वज्ञदेव की इस बात पर ध्यान देता है कि तू अनादि–अनन्त, अमर है।

क्या तुझे यह इष्ट नहीं है ?

क्या यह तेरे हित की बात नहीं है ?

कुछ लोग कहते हैं कि ''तू परमात्मा का एक अंशमात्र है, उसमें से ही आया है और फिर जाकर उसी में मिल जायेगा। वही परमात्मा तेरा और इस जगत का संचालक है और उसकी मर्जी के बिना पत्ता तक नहीं हिलता है'' उनके अनुसार तो तेरे हाथ में कुछ है ही नहीं, तेरा तो कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है, जीवन–मरण, सुख–दु:ख कुछ भी नहीं।

क्या तुझे अपनी यह हैसियत, अपनी यह नियति स्वीकार है ?

तेरे सामने दो विकल्प हैं –

1. अनादि–अनंत स्वतंत्र व परिपूर्ण भगवान आत्मा को स्वीकार कर या

2. ''तू ईश्वर का एक अंश है जो उसी में जाकर मिल जायेगा और वही तेरा संचालन करता है।'' ऐसा मानकर अपने आपको भगवान भरोसे छोड़ दे।

आज तक तूने दूसरा विकल्प ही अपनाया है और फलस्वरूप आज तेरी क्या दशा है यह बात तुझसे बेहतर और कौन जानता है ?

अन्य पहला विकल्प तूने आज तक न तो स्वीकार किया है और न ही आजमाया है क्या यह उचित और बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय नहीं होगा कि हम एक बार इस संभावना की ओर भी ध्यान दें ?

क्या आत्मा के अस्तित्व और उसकी अनादि–अनन्तता की धारणा इतनी कमजोर, आधारहीन और अनुपयोगी है कि उसकी ओर ध्यान ही न दिया जाये, उस पर विचार ही न किया जाये ?

यदि नहीं तो कौन करेगा यह सब ?

यदि अभी नहीं तो तू यह काम कब करेगा ? **(क्रमश:)**

।। हार्दिक आमंत्रण ।।

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

एवरेस्ट आशियाना, एअरपोर्ट रोड, डबोक, उदयपुर- २४

श्री रत्नत्रय विधान

शुक्रवार, दि. २२ अप्रैल २०१६

श्री सीमंधर जिनालय वेदी शिलान्यास महोत्सव

शनिवार, दि. २३ अप्रैल २०१६

अतिथि निवास कन्या छात्रावास भवन उद्घाटन समारोह

रविवार, दि. २४ अप्रैल २०१६

जैन बालिका संस्कार संस्थान
जैन दर्शन कन्या महाविद्यालय
उदयपुर

सम्पर्क सूत्र : 97235 50590, 97235 50592, 94141 03492

Email: info@shashwatdham.com • www.shashwatdham.com

दृष्टि का विषय

21 पाँचवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

समयसार परमागम की छठवीं-सातवीं गाथा के आधार से इस विषय पर चर्चा चल रही है कि दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं और पर्याय शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है ?

इस संबंध में शिष्य का प्रश्न है कि आपने गुणभेद का निषेध करके भी गुणों को रखकर भाव को अखण्डित कर लिया, द्रव्यभेद का निषेध करके भी द्रव्य को रखकर अथवा सामान्य को रखकर द्रव्य को अखण्डित कर लिया, प्रदेश भेद का निषेध करके भी प्रदेशों को अभेदरूप से रखकर क्षेत्र को भी सुरक्षित कर लिया; लेकिन पर्यायों को निकाल कर काल को खण्डित कर दिया, जबकि इसी समयसार में आगे ऐसा कहा गया है कि – **न द्रव्येण खण्डयामि, न क्षेत्रेण खण्डयामि, न कालेन खण्डयामि, न भावेन खण्डयामि, सुविशुद्ध एको ज्ञानमात्रभावोऽस्मि।**[१]

इसलिए पर्यायभेद का निषेध कर पर्यायों को अभेदरूप से रखकर काल को भी सुरक्षित करना चाहिए था, लेकिन आपने पर्याय को शामिल न करके दृष्टि के विषय को काल से खण्डित कर दिया है।

इसका उत्तर देने से पूर्व मैं एक बात और भी बताना चाहता हूँ कि सर्वत्र प्राय: यह देखा जाता है कि गुण और गुणभेद की चर्चा ही ज्यादा होती है, प्रदेश व प्रदेशभेद की चर्चा बहुत कम होती है; लेकिन मैंने पूर्व प्रकरण में इन सभी की समानरूप से चर्चा की है।

प्रदेशभेद की चर्चा न होने के कारण यह है कि गुणों के लक्षण तो अलग-अलग हैं, इसलिए उनमें तो लक्षणभेद है; जबकि प्रदेशों के लक्षण अलग-अलग नहीं हैं, सभी प्रदेशों का एक ही लक्षण है।

जैसे ज्ञानगुण जानने का काम करता है, दर्शन गुण देखने का काम करता है; ऐसा लक्षणभेद प्रदेशों में नहीं है तथा प्रदेशों का कार्य भी अलग-अलग नहीं है।

पहले जो तत्त्वार्थसूत्र दिगम्बर जैन संघ, मथुरा से प्रकाशित होता था। उसके अन्त में ५९ प्रश्नोत्तर थे, उन प्रश्नों को धवला आदि के आधार से पण्डितश्री फूलचन्दजी सिद्धान्त शास्त्री ने लिखा था।

उनमें एक प्रश्न यह भी था कि चक्षु-इन्द्रियावरणकर्म का क्षयोपशम आत्मा के किन प्रदेशों में होता है ? आँख से हम देखते हैं तो आँख में जो आत्मा के प्रदेश हैं, उनमें ही चक्षु-इन्द्रियावरणकर्म का क्षयोपशम होना चाहिए; क्योंकि दिखाई तो आँख से ही देता है। यदि क्षयोपशम सर्वांग होता हो तो शरीर के सभी अंगों से दिखाई देना चाहिए।

इस प्रश्न का उत्तर उसमें इसप्रकार लिखा है कि **चक्षु-इन्द्रियावरण कर्म का क्षयोपशम आत्मा के समस्त प्रदेशों में ही है।**

शंका – यदि समस्त प्रदेशों में चक्षु-इन्द्रियावरणकर्म का क्षयोपशम है तो आत्मा को सभी जगह से देखना चाहिए ?

समाधान – वहाँ चक्षु-इन्द्रिय नहीं है, इसलिए नहीं देख सकते।

शंका – इसका मतलब तो यह है कि आत्मा पराधीन हो गया; क्योंकि आत्मा में क्षयोपशम तो है, लेकिन वह आँख नहीं होने से देख नहीं सकता ?

इस शंका का बहुत सुन्दर समाधान प्रस्तुत कर वहाँ समझाया गया है कि आत्मा के बीच के आठ प्रदेशों को छोड़कर बाकी के सभी प्रदेश घूमते रहते हैं। जैसे शरीर में खून घूमता रहता है या एक मिनिट में ७२ बार हृदय धड़कता रहता है, वैसे ही आत्मा के प्रदेश निरन्तर तेजी से घूमते ही रहते हैं, यदि मात्र चक्षु-इन्द्रियवाले प्रदेशों में ही चक्षु-इन्द्रियावरणकर्म का क्षयोपशम मानेंगे तो वे प्रदेश तो घूमने के कारण पैर में पहुँच जाते हैं और पैरवाले प्रदेश चक्षु-इन्द्रिय के पास पहुँच जाते हैं, फिर उस समय आत्मा को नहीं दिखना चाहिए; लेकिन उस समय भी आत्मा को दिखता है। इसका तात्पर्य यह है कि **क्षयोपशम सर्वांग प्रदेशों में रहता है।**

आत्मा के सभी प्रदेश घूमते हैं, लेकिन बीच के जो आठ प्रदेश हैं, वे नहीं घूमते हैं। बीच के आठ प्रदेशों के नहीं घूमने का अर्थ यह है कि उनमें स्थान परिवर्तन नहीं होता। लेकिन वे प्रदेश भी अपने स्थान पर रहते हुए वहीं के वहीं घूमते रहते हैं।

यदि बीच के आठ प्रदेश नहीं घूमें तो आत्मा अखण्ड नहीं रह सकता है; क्योंकि यदि बीच के आठ प्रदेश नहीं घूमेंगे और अन्य प्रदेश तेजी से घूमेंगे तो फिर जो प्रदेश वहाँ से जुड़ा हुआ है, वह टूट जायेगा।

अत: वे प्रदेश घूमते भी हैं और नहीं भी घूमते हैं। **वे अपने स्थान पर ही चक्कर लगाते हैं, इसलिए घूमते भी हैं और उनका वहाँ से स्थान परिवर्तन नहीं होता है, इसलिए वे नहीं घूमते – ऐसा भी कहा जाता है।**

अब **प्रश्न** उपस्थित होता है कि बीच का तो एक ही होता है, बीच के आठ कैसे हो सकते हैं ?

इनका **समाधान** यह है कि जिसप्रकार यदि दो अंगुलियाँ हों तो उनमें बीच की अंगुली हो ही नहीं सकती है। यदि तीन अंगुलियाँ हों तो एक अंगुली बीच की होती है और यदि चार अंगुलियाँ हों तो फिर दो अंगुलियों को बीच का कहना पड़ेगा; इसीप्रकार यदि

१. समयसार की आत्मख्याति टीका के परिशिष्ट में २७०वें कलश के बाद का गद्यांश

अगल–बगल और ऊपर–नीचे सभी ओर से लगायेंगे तो आठ से कम प्रदेशों को बीच का नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि यदि उससे कम को बीच का कहेंगे तो एक ओर ज्यादा हो जायेंगे और एक ओर कम।

आत्मा के सभी प्रदेश समसंख्या में हैं, यदि विषम संख्या में होते तो एक को बीच का कहा जा सकता है।

समसंख्या में यदि पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण, ऊपर–नीचे – इन छह दिशाओं में बांटे तो आठ प्रदेशों से कम प्रदेशों को बीच का नहीं कहा जा सकता है।

इसप्रकार आठ प्रदेशों को छोड़कर आत्मा के समस्त प्रदेश ऊपर से नीचे घूमते रहते हैं। अब **यदि मात्र चक्षु–इन्द्रिय के प्रदेशों को छोड़कर सभी प्रदेशों में चक्षु–इन्द्रियावरणकर्म का क्षयोपशम नहीं होता तो फिर प्रदेशों के घूमते रहने के कारण आत्मा को नहीं दिखता।**

इस चर्चा से मैं यह कहना चाहता हूँ कि जैसा गुणों में लक्षणभेद और कार्यभेद हैं; वैसा प्रदेशों में न तो लक्षणभेद है और न ही कार्यभेद है। आत्मा के समस्त असंख्य प्रदेशों में क्षयोपशम तथा केवलज्ञान भी सब जगह एकसा एक साथ ही होता है।

सुख के संबंध में ऐसा नहीं होता है कि मात्र दिमाग के प्रदेशों में ही अतीन्द्रिय आनन्द आता हो। **जब सम्यग्दर्शन होता है, तब आत्मा के सर्वांग प्रदेशों में अर्थात् असंख्य प्रदेशों में अतीन्द्रिय आनन्द का झरना झरता है।**

इसीकारण प्रदेशभेद की चर्चा आजकल नहीं होती है। सब जगह गुणभेद की ही चर्चा होती है।

प्रवचन के आरंभ में किये गये प्रश्न का उत्तर इसप्रकार है–

दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा को सामान्य, अनादि–अनन्त–त्रिकाली ध्रुव नित्य, असंख्यातप्रदेशी–अभेद एवं अनंतगुणात्मक–अखण्ड, एक कहा गया है। इसमें जिसप्रकार सामान्य कहकर **द्रव्य को अखण्ड रखा गया है,** असंख्यातप्रदेशी–अभेद कहकर **क्षेत्र को अखण्ड रखा गया है** और अनंतगुणात्मक अखण्ड कहकर **भाव को अखण्ड रखा गया है;** उसीपकार अनादि–अनन्त, त्रिकाली ध्रुव, नित्य, कहकर काल को भी अखण्डित रखा गया है। **अन्त में एक कहकर सभी प्रकार की अनेकता का निषेध कर दिया गया है।**

इसप्रकार दृष्टि के विषयभूत त्रिकाली ध्रुव द्रव्य में स्वकाल का निषेध नहीं किया गया है; अपितु विशिष्ट पर्यायों का ही निषेध किया गया है।[१]

उपर्युक्त कथन में आत्मा को **द्रव्य की अपेक्षा सामान्य, काल की अपेक्षा अनादि–अनन्त त्रिकाली ध्रुव नित्य, क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात प्रदेशी और भाव की अपेक्षा अनंतगुणात्मक अखण्ड कहा गया है।**

इसमें जो भी बाद में 'एक' कहा है, उसके माध्यम से उक्त सभी प्रकार की अनेकता का निषेध कर दिया गया है।

अन्त में जो 'एक' कहा है, वह भाव वाली अनेकता का निषेध करने के लिए नहीं, अपितु चारों प्रकार की अनेकता का निषेध करने के लिए कहा है; क्योंकि भाव की अनेकता का निषेध करने के लिए तो अखण्ड कहा है और क्षेत्र की अनेकता का निषेध करने के लिए अभेद कहा है, द्रव्य की अनेकता का निषेध करने के लिए सामान्य कहा है और काल की अनेकता का निषेध करने के लिए त्रिकाली ध्रुव नित्य कहा है।

अन्त में जो यह कहा गया है कि 'इसप्रकार दृष्टि के विषयभूत त्रिकाली ध्रुव द्रव्य में स्वकाल का निषेध नहीं किया गया है, अपितु विशिष्ट पर्यायों का ही निषेध किया गया है', उसका अर्थ यह है कि काल के दो पक्ष होते हैं एक अनित्यता और दूसरा नित्यता अर्थात् विशिष्ट पर्याय और पर्यायों का अभेद, सामान्य।

वहाँ दृष्टि के विषय में अभेद सामान्य का निषेध नहीं किया गया है; अपितु विशिष्ट पर्यायों का ही निषेध किया गया है। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान और केवलज्ञान – ये विशिष्ट पर्यायें हैं और इन विशिष्ट पर्यायों का दृष्टि के विषय में निषेध है। केवलज्ञान भी विशिष्ट पर्याय होने से दृष्टि के विषय में शमिल नहीं है।

लेकिन दृष्टि के विषय में निगोद से लेकर मोक्ष तक की समस्त पर्यायों का अभेद शामिल है, उस अभेद का नाम काल का अभेद है और काल का अभेद होने से वह द्रव्यार्थिकनय का विषय है, इसलिए उस अभेद का नाम द्रव्य है, पर्याय नहीं। पर्याय तो उसके अंश का नाम है, भेद का नाम है। **(क्रमश:)**

१. समयसार अनुशीलन, भाग १, पृष्ठ–७६

सूचना

पूज्य बाबूजी 'युगलजी' कोटा की स्मृति में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन की ओर से 'युगल चेतना' विशेषांक प्रकाशित किया गया है। यह विशेषांक प्राप्त करने हेत इस मोबाइल नम्बर पर अपना पता एस.एम.एस. करें – 7698383799 इस विशेषांक को ई–मेल पर मंगाने हेतु इस ई–मेल आई.डी. पर मेल करें – **gyata@jhanjhari.com**

चन्देरी में वार्षिकोत्सव

चन्देरी : तीर्थधाम आदीश्वरम का वार्षिकोत्सव दिनांक 2 व 3 फरवरी को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मस्तकाभिषेक, वेदी शिलान्यास, विधान, 9 वेदियों में श्रीजी विराजमान, चिकित्सालय, साहित्य बिक्री केन्द्र एवं विश्रांतिगृह का उद्घाटन तथा आशा का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित है। सभी साधर्मीजन पधारकर लाभ लें।

2 जनवरी 2016, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आगामी कार्यक्रम...

(1) शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में फाल्गुन माह की अष्टाह्निका में 16 मार्च से 23 मार्च तक पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिलेगा। सभी साधर्मियों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में प्रवचनों का लाभ लेवें।

आवास की व्यवस्था हेतु 07250536682 पर पूर्व सूचना देवें।

(2) सिद्धायतन द्रोणगिरि में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 3 से 10 फरवरी तक ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' के सानिध्य में समयसार शिक्षण शिविर एवं समयसार विधान का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। आवास हेतु अपनी सूचना भेजने की अन्तिम तिथि 20 जनवरी है। **संपर्क सूत्र :** मो. 9753456868 (पंकज जैन), 8349981560 (शुभम शास्त्री)।

(3) आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पौन्नूरमलै में -

आध्यात्मिक युवा शिक्षण शिविर

शनिवार 20 फरवरी से गुरुवार 25 फरवरी 2016 तक

आमंत्रित विद्वान : पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ।

शिविर में स्थान सीमित हैं। पहले आओ - पहले पाओ के आधार पर पंजीयन होगा। आगमन की पूर्व सूचना देकर शीघ्र पंजीयन करावें।

आयोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई।

संपर्क सूत्र : विराग शास्त्री 09300642434

(4) चन्देरी : तीर्थधाम आदीश्वरम का वार्षिकोत्सव दिनांक 2 व 3 फरवरी को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मस्तकाभिषेक, वेदी शिलान्यास, विधान, 9 वेदियों में श्रीजी विराजमान, चिकित्सालय, साहित्य बिक्री केन्द्र एवं विश्रांतिगृह का उद्घाटन तथा आशा का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित है। सभी साधर्मीजन पधारकर लाभ लें।

शोक समाचार

(1) हिंगोली (महा.) निवासी स्व. पण्डित पद्माकररावजी दोण्डल की धर्मपत्नी एवं श्री प्रदीपजी दोण्डल की माताजी **श्रीमती कस्तूरीबाई** का दिनांक 18 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अत्यंत समर्पित एवं सहयोगी थे। आपकी स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्री विमलचंदजी बाकलीवाल का दिनांक 20 दिसम्बर को 83 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत शांतप्रिय व्यक्ति थे। आपकी स्मृति में पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल द्वारा संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक **पण्डित संजयकुमारजी शाह बांसवाड़ा** ने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा आयोजित आचार्य परीक्षा-2013 'प्राकृत जैनागम' में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये हैं। साथ ही **पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा** ने जैनदर्शनाचार्य परीक्षा-2006 में एवं **पण्डित आकाशजी शास्त्री** ने जैनदर्शनाचार्य परीक्षा-2008 में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये। एतदर्थ दिनांक 16 दिसम्बर को विश्वविद्यालय में आयोजित प्रथम दीक्षांत समारोह में माननीय राज्यपाल एवं कुलपति महोदय द्वारा उपाधि एवं स्वर्णपदक प्रदान किया गया।

ज्ञातव्य है कि संजयजी शाह शिक्षा के क्षेत्र में पूर्व में भी अनेक सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। आपने 9 विषयों में एम.ए. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

अरिहंत चैनल पर : स्वामीजी के प्रवचन

अरिहंत चैनल पर प्रथम बार 1 जनवरी 2016 से आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचनों का प्रसारण किया जा रहा है।

अरिहंत चैनल पर यह प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 7.00 से 7.20 तक प्रसारित किया जायेगा। अवश्य देखें।

अरिहंत चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.194 एवं वीडियोकॉन के 487 पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127